राजस्थान के किलों की स्थापत्य कला और राजपूत शैली का अवलोकनः आमेर के किले के संदर्भ में विशेष अध्ययन

*शशि आलोरिया

सारांश

भारत देश में राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है, जहां मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के बाद सर्वाधिक लगभग 250 किले और दुर्ग बने हुए हैं। देश में महाराष्ट्र और राजस्थान में पग पग पर किले दिखाई देते हैं। इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य राजस्थान में किलों का इतिहास, किलों के प्रकार, आमेर के किले की मूल स्थापत्य कला तथा राजपूत शैली का अवलोकनात्मक अध्ययन करना है। राजस्थान में किलों की ढांचागत संरचना में समय के साथ हुए परिवर्तनों पर प्रकाश डालना है।राजस्थान के किलों की स्थापत्य कला और राजपूत शैली का अवलोकनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि राजस्थान में किलों का इतिहास पुराना है तथा इतिहास के गलियारों के हुए परिवर्तनों की छाप राजस्थान के किलों की स्थापत्य कला पर स्पष्ट दिखाई पड़ती है। आमेर के किले के संदर्भ में में कहा जा सकता है कि किले की संरचनात्मक विन्यास पर पर राजपूत शैली के साथ मुगल स्थापत्य कला का मिश्रण दिखाई पड़ता है।

मुख्य बिन्दु : स्थापत्य कला, राजपूत शैली, किलों की संरचना व अवलोकनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

भारत देश में राजस्थान एक ऐसा प्रदेश है, जहां मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के बाद सर्वाधिक लगभग 250 किले और दुर्ग बने हुए हैं। देश में महाराष्ट्र और राजस्थान में पग पग पर किले दिखाई देते हैं। राजस्थान के राजाओं और सामंतों द्वारा निवास, सुरक्षा, सामग्री संग्रहण, आक्रमण के समय प्रजा को सुरक्षित रखने, पशुधन को बचाने और संपत्ति छुपाने के लिए अनेक किलों व दुर्गों का निर्माण करवाया। राज्य में किलों की स्थापत्य का विकास का सर्वप्रथम प्रमाण कालीबंगा की खुदाई में प्राप्त होता है। कालांतर में मौर्य, गुप्त और परवर्ती युग में कई किलों के स्वरूप व निश्चित आधार उपलब्ध होते हैं। पीर सुल्तान और बड़ोपल श्रीगंगानगर जिले में किलो के अवशेष दिखाई देते हैं। इनकी संरचना में मजबूत एवं सुदृढ़ प्राचीर, इमारतें, द्वार और गोल बुर्ज की पहचान थी। सातवीं सदी में चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निर्माण मौर्यवंशी राजाओं द्वारा करवाया गया। इस काल में दुर्ग निर्माण में मंदिरों तथा जलाशयों को भी प्रधानता देखी जाती थी।

राजपूत काल में राज्य में अनेक किले बने जिसमें इन सभी विशेषताओं का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। इस काल में किलो में भाटियों का मरोड़, सोनगढ़, अजमेर जिले में अजयराज चौहान का तारागढ, राणा कुंभा का मांडलगढ़ आदि महत्वपूर्ण किले बनाए गए। सन् 1192 में मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज चौहान को हराकर भारतीय

इतिहास में राजपूत युग को समाप्त किया और मुस्लिम युग की स्थापना की। जिससे चारों ओर भय और असुरक्षा का वातावरण उत्पन्न हो गया था। इसीलिए 13वीं सदी के बाद समय में किले बनाने की परंपरा एक नई दिशा में परिवर्तन दिखाई देता है। इस सामंती काल के किलों का निर्माण में सुरक्षा को विशेष ध्यान में रखा गया था। इस समय के किले वहां बनाए जाने लगे, जहां ऊंची पहाड़ी हो, जो ऊपर से चौड़ी व समतल हो। पहाड़ी के ऊपर समतल भाग को सुदृढ़ दीवारों से घेरा जाने लगा। यहां खेती योग्य भूमि और सिंचाई के साधनों का भी विकास किया जाने लगा। इस काल में अनेक किले बने तथा जो जीर्ण–शीर्ण या खंडहर हो गए थे, उनका पुनर्निर्माण करवाया गया। उदाहरण के लिए किला सामरिक महत्व की उपयोगिता रखने वाला अचलगढ़ के प्राचीन किले का पुनर्निर्माण महाराणा कुंभा द्वारा करवाया गया। ताकि यहां के सीमांत भागों को सैनिक की सहायता से सुरक्षित रखा जा सके। महाराणा कुंभा ने चित्तौड़गढ़ किले का भी पुनर्निर्माण करवाया था। कुंभलगढ़ के किले को पहाड़ी श्रृंखलाओं से घेरी हुई प्राचीर द्वारा सुरक्षा व्यवस्था की गई। इस किले के चारों ओर दीवारें चौड़ी और बड़े आकार की बनाई गई जिन पर कम से कम आठ घोड़े एक साथ दौड़ सकते हैं।

इस प्रकार किलों की प्राचीन पद्धति में मुसलमानों के आगमन से पहले योधेयों का भटनेर का किला तथा आबू के परमारों का किला बनाया गया था। चौहानों द्वारा निर्मित नागौर के किले का अल्तमश के गर्वनर शमसखां ने सुदृढ़ दीवारों, द्वारों, सैनिकों और राजकीय भवनों में परिवर्तित कर दिया। मुगलों के साथ राजपूत शासको का संपर्क हुआ तो दुर्ग स्थापित्य कला में परिवर्तन स्पष्ट दिखाई देने लगा। अब पहाड़ियों से नीचे आकर समतल मैदानों पर किलों का निर्माण करने लगे, जैसे बीकानेर, भरतपुर और जयपुर।

अध्ययन क्षेत्र

आमेर जयपुर से 11 कि.मी. उत्तर में स्थित एक छोटा कस्बा है, जिसका विस्तार 4 वर्ग किलोमीटर कस्बा है। यहां एक ऊंची पहाड़ी पर आमेर का किला स्थित है, इसकी प्राचीरों, द्वारों की श्रृंखलाओं एवं पत्थर के बने रास्तें हैं। यह किला पहाड़ी के नीचे बने मावठा तालाब को देखता हुआ प्रतीत होता है। यही तालाब आमेर के किले की जल आपूर्ति का मुख्य स्रोत था। राजस्थान के पूर्वी भाग में ढूंढ नदी के कारण यह क्षेत्र पहले ढूंढाड़ नाम से प्रसिद्ध था। वर्तमान जयपुर, दौसा, सवाई माधोपुर, टोंक जिले एवं करौली का उत्तरी भाग इस क्षेत्र में सम्मिलित था। इस क्षेत्र में ऊष्म मरुस्थलीय जलवायु तथा ऊष्म अर्ध–शुष्क जलवायु पाई जाती है। यहां की औसत वार्षिक वर्षा 65 सेमी० है, जिसका अधिकांश भाग मानसून माहिनों, जून से सितम्बर के बीच में ही होता है। ग्रीष्मकाल में अपेक्षाकृत उच्च तापमान रहता है। शीतकाल नवम्बर से फरवरी में अपेक्षाकृत सुखदायी होते हैं। पुरातत्त्वविज्ञान एवं संग्रहालय विभाग के आंकड़ों के अनुसार यहाँ यहां 5000 पर्यटक प्रतिदिन आते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध पत्र का प्रमुख उद्देश्य राजस्थान में किलों का इतिहास, किलों के प्रकार, आमेर के किले की मूल स्थापत्य कला तथा राजपूत शैली का अवलोकनात्मक अध्ययन करना है। राजस्थान में किलों की ढांचागत संरचना में समय के साथ हुए परिवर्तनों पर प्रकाश डालना है। इसके अलावा हम दूसरे प्रमुख राजपूत शासकों द्वारा निर्मित किलों जैसे मेहरानगढ़ किला, चित्तौड़गढ़ किला और जैसलमेर के किलों का भी संक्षिप्त अध्ययन करना रहा है। आमेर के किले का वर्तमान परिप्रेक्ष्य में राजंस्थान की संस्कृति को समझने तथा पर्यटन में योगदान का अध्ययन करना है।

शोध परिकल्पनाऐं

इस शोध पत्र के शीर्षक ''राजस्थान के किलों की स्थापत्य कला और राजपूत शैली का अवलोकन : आमेर के किले के संदर्भ में विशेष अध्ययन'' के लिए निम्न दो शोध परिकल्पनाएं अनुप्रयुक्त की गई –

1. राजस्थान में किलों की स्थापत्य कला में समय के साथ परिवर्तन हुए हैं।
2. आमेर के किले की स्थापत्य कला पर राजपूत शैली के साथ मुगल स्थापत्य कला मिश्रण है।

शोध अध्ययन

किलो के निर्माण ऊंची एवं चौड़ी समतल पहाड़ियों पर किया जाता था जहां खेती और सिंचाई के साधन उपलब्ध हो सकते हैं किलो की प्रमुख विशेषताओं में सुदर्शन प्राची रे विशाल पर कोटा अभ्यर्थी बुर्ज दुर्गा के चारों ओर गहरी खाई किले के अंदर शस्त्रागार की व्यवस्था मंदिर निर्माण जिला से अन्य भंडारागार की स्थापना गुप्त प्रवेश द्वार सुरंग का निर्माण राज प्रसाद और सैनिक विश्रमघरों की व्यवस्था प्रमुख हैं।

इस शोध पत्र में राजपूताना की संस्कृति परंपराओं और कलाओं का को प्रकाशित किया गया है। कैसे आमेर का किला अपने क्षेत्र में एक समृद्ध संस्कृति का प्रतीक है? इस पर विचार किया गया है। यहां किले में स्थित युद्ध कला और सेना की परंपरा के अध्ययन को शामिल किया गया है। आमेर का किला वर्तमान में महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय स्तर का पर्यटन स्थल बन चुका है पर्यटन और आर्थिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया गया है कि कैसे किले ने अपने क्षेत्र को विकसित किया है और कैसे यह पर्यटन से जुड़ा हुआ है? इसका विशेष अध्ययन किया गया है।

दुर्गों के प्रकार

राजस्थान के शासकों ने भारतीय दुर्ग निर्माण परम्परा तहत् भिन्न–भिन्न उद्देश्यों के लिए विभिन्न प्रकार के किलों का निर्माण किया जाता था। कौटिल्य द्वारा दुर्गों को चार प्रमुख श्रेणियां औदुक, पर्वत, धान्व और वन दुर्ग में बॉटा गया है। शुक्र नीति में राज्य के साथ अंगों में दुर्ग को प्रमुख अंग बताया है। शुक्र नीति में नौ तरह के दुर्ग एरण, पारीख परि धान्वन, जल, गिरी, सैन्य तथा सहाय दुर्ग का वर्णन किया गया है। राजस्थान में उपरोक्त सभी प्रकार के दुर्ग देखे जा सकते हैं, जिनकी विस्तृत व्याख्या निम्न प्रकार है –

1. ओदुक दुर्ग : इसे जल दुर्ग भी कहा जाता है। ऐसा दुर्ग जो विशाल जल राशि के चारों तरफ गिरा हुआ हो। उदाहरण के रूप में गागरोण का किला इसी प्रकार का उदाहरण है।
2. पर्वत दुर्ग : किसी ऊंचे पर्वत पर स्थित दुर्ग को पर्वत द्रव कहा जाता है चित्तौड़गढ़ दुर्ग रणथंबोर दुर्ग तारागढ़ दुर्ग आमेर का जयगढ़ दुर्ग आदि इसी प्रकार के उदाहरण है।
3. धान्वन दुर्ग : मरुस्थलीय भागों में बने किलों को धान्वन दुर्ग कहा जाता है। उदाहरण के रूप में जैसलमेर के किले को दंखा जा सकता है।
4. वन दुर्ग : घने जंगलों में बना लिया गया किला वन दुर्ग कहलाता है। जालौर जिले में सिवाना दुर्ग इसी प्रकार का उदाहरण प्रस्तुत है।
5. एरण दुर्ग : इस किले के मार्ग खाई, कॉटों पत्थरों से भरा दुर्गम हो, उसे एरण दुर्ग कहा जाता है राजस्थान के चित्तौड़गढ़ और जालौर के दुर्ग इस प्रकार के उदाहरण हैं।

6. पारीख दुर्ग : इस दुर्ग के चारों ओर बहुत बड़ी खाई बनाई जाती है। भरतपुर का किला और बीकानेर के जूनागढ़ का किला इसी प्रकार के उदाहरण हैं।
7. पारिध दुर्ग : जिन दुर्गों के चारों ओर बड़ी दीवारों का एक परकोटा हो उसे पारिध दुर्ग कहा जाता है। चित्तौड़गढ, बीकानेर, जैसलमेर, जालौर इसी श्रेणी के किलो के अंतर्गत आते हैं।
8. सैन्य दुर्ग : इसमें उन किलो को सम्मिलित किया जाता है जहां से युद्ध की व्यूह रचना के लिए चतुर सैनिक रहते हों और यह युद्ध कला के लिए प्रसिद्ध माने जाते हैं। चित्तौड़गढ़ का किला इसी श्रेणी के अंतर्गत माना जाता है।
9. सहाय दुर्ग : वह किला जहां शूरवीर सदा के अनुकूल रहने वाले बांधव लोग निवास करते हो तथा मुख्य बड़े किलों के सुदूरवर्ती सीमांत क्षेत्रों के सहयोग के लिए छोटे किलों का निर्माण किया जाता है, उन्हें सहाय दुर्ग कहा जाता है। हनुमानगढ़ का भटनेर दुर्ग और भरतपुर का लोहागढ़ मिट्टी से बने दुर्ग इसी श्रेणी में माने जाते हैं।

आमेर का किला

आमेर का किला राजस्थान के जयपुर शहर के निकट स्थित है और यह किला राजा मानसिंह के नेतृत्व में 16वीं शताब्दी में बनवाया गया था। आमेर का किला अपने भीतर स्थित मंदिर, महल और राजपूताना की विरासत के लिए प्रसिद्ध है। आमेर के महलों और किले का निर्माण कार्यों का प्रारम्भ कच्छावा राजा भारमल ने वर्ष 1558 में करवाया। जिसको राजा मानसिंह प्रथम मिर्जा राजा जयसिंह तथा सवाई जयसिंह द्वारा लगभग 100 सालों में पूरा करवाया गया। आमेर के किले तक जाने के लिए जयपुर शहर के जोरावर सिंह गेट से सीधी सड़क घाटी होती हुई पहुंचती है, जहां मावठा जल से मावठा नाम की एक झील है, जिसके पास दिलाराम का बाग विकसित किया गया है। यहां से पहाड़ी के मध्य भाग में स्थित है। आमेर के किले में लगभग 150 मीटर की चढ़ाई पड़ती है, जिसको करने के लिए वर्तमान में भी हाथी की सवारी अथवा पैदल ही आमेर के किले के प्रवेश द्वार सूरजपोल तक जाया जा सकता है।

चित्र : 1

आमेर के किले के मावठा झील

चित्र : 2

आमेर के किले का बाहरी दृश्य

किले की संरचना का अवलोकन

आमेर के किले की संरचना को समझने के लिए चार भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहाड़ी पर चढ़ना पर सबसे पहले जलेबी चौक आता है। इस चौक के तीन तरफ भवनों की कतारें हैं, जिनका निर्माण सैनिकों के निवास और आयुधशाला के लिए किया गया था। सूरजपोल दरवाजे के सामने पश्चिम दिशा में चांदपोल दरवाजे का निर्माण किया गया है। यह दोनों दरवाजे हिंदू परंपरागत राजपूत शैली में बनाए गए हैं। जलेबी चौक से राजप्रसादों में जाने के लिए चौक के दक्षिण पूर्व दिशा में बनी सीढ़ियां चढ़ने पर सिंहपोल प्रवेश द्वार आता है। यह दरवाजा दीवाने आम चौक का प्रवेश द्वार भी है। सिंहपोल दरवाजे के बगल में ही शीतला माता की कलात्मक प्रतिमा का प्रसिद्ध मंदिर है।

चित्र : 3

गणेश पोल दरवाजा

चित्र : 4

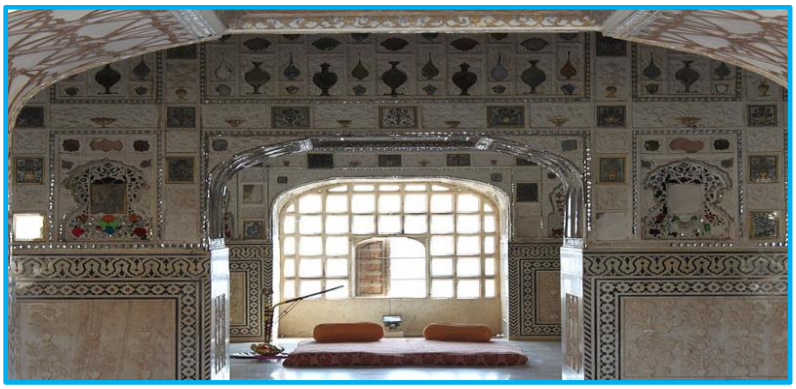

शीश महल का दृश्य

मिर्जा राजा जयसिंह के शासनकाल में सन 1623 में 1627 ई के बीच दीवान ए आम का निर्माण किया गया। यह दीवान ए आम राजा के आम दरबार लगाने के लिए उपयोग किया जाता था। इसका निर्माण खुले चौक में ऊंचे चबूतरे पर दो कारों में 40 सुंदर कलात्मक एवम मजबूत स्तंभों पर किया गया है। इस भवन के 12 कोणीय स्वरुप को आकर्षक बनाने के लिए स्तंभों के ऊपर बने टोडो के आगे के भाग पर हाथी का सिर तथा उस पर कमल के फूल उकेरे गए हैं तथा इसकी छत गुंबदनुमा है। इस भवन की सुंदरता के संबंध में बताया जाता है कि इसकी सुंदरता की कहानी सुनकर मुगल बादशाह जहांगीर के मन में ईर्ष्या हो गई थी जिसे कच्छावा मिर्जा राजा जयसिंह को भी चिंता में डाल दिया था और जिसके कारण राजा को इसके स्तंभों पर चूने का लेप करवाना पड़ा।

चित्र : 5

दीवान ए आम का दृश्य

दीवान ए आम चौक के उत्तर दिशा में गणेश पोल भव्य और अलंकृत दरवाजा है। जहां से महलों के आंतरिक भागों में जाया जा सकता है। यह दरवाजा दो मंजिल का है, जिसकी ऊपरी मंजिल में सुहाग मंदिर है। यहां से एक तरफ महल से तीसरा चौक और दूसरी तरफ दीवाने आम दिखाई देता है। सुहाग मंदिर में पत्थर की सुंदर जलियां लगी हुई है, जिस पर क्षत्रिय बनी हुई हैं। यह छतरियां हिंदू मुगल शैलियों की मिश्रित संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं गणेश पॉल में एवं सुहाग मंदिर पर चित्रकार भी की बनाई गई है। प्रसिद्ध कलाकार फर्ग्यूसन द्वारा इस दरवाजे को श्रेष्ठतम दरवाजों में से एक बताया गया है। एक अन्य कलाकार ने इस दरवाजे की तुलना सिकंदराबाद के अकबर के मकबरे से की है। उन्होंने लिखा है ''द कंपोजीशन ऑफ फायर पॉइंटेड आर्चीज विच ए सेंट्रल टॉल वन फ्लैंकड बाई स्मॉलर वनस इन टायर्स – इस कॉपिड फ्रॉम सच मुगल मॉन्यूमेंट्स एज द गेटवे टू अकबर'स टॉन्ब एट सिकंदरा विच आर ऑफ एन अर्ली टेक। बट द कांबिनेशन ऑफ द हेवीनेस ऑफ द गणेशपॉल'स स्क्वेयर फ्रेम विद लाइटनेस ऑफ इट्स डिटेल्स मेक इट सिमिलर टू सम ऑफ द गेटस ऑफ द जयपुर पेलेस कंपलेक्स।''

चित्र : 4

शीश महल **का बाहरी दृश्य**

गणेश पॉल दरवाजे से प्रवेश करने पर अत्यधिक आकर्षक और मनोरम राजमहलों का तीसरा चौक दिखाई देता है। इसमें प्रसिद्ध शीश महल और जय मंदिर हैं, जिसकी दीवारों और छत पर सुन्दर कांच की जड़ाई का कार्य किया गया है। इस महल में हजारों कांचों का प्रयोग एक दीपक के अनेक प्रतिबिंब बनाने के लिए किया गया है। जय मंदिर के ऊपर एक खुला हॉल है, जो मेहराबों और पर कांच की जड़ी जड़ा हुई दीवारों से जस मंदिर का निर्माण किया गया है। जिसकी छत धनुषाकर है, जिसके दोनों तरफ गुंबद बने हुए हैं। जय मंदिर के पास ही राजाओं का ग्रीष्मकालीन निवास के लिए महल बड़ा खुला कमरा सुख निवास बनाया गया है। जिसकी दीवारों और

चौकतों पर शीतल पवन के लिए सैकड़ो छिद्र बने हुए हैं। इसके किंवाड़ों पर हाथी दांत और चंदन का कार्य भी किया गया है।

अंतिम और चौथा चौक किले का जानना भाग है, यह एक लंबे सकते गलियारे से होकर तीसरी चौक से भी जुड़ा हुआ है। इस चौक के बीच में बारादरी है जिसमें 12 दांतेदार मेहराबों से बनाया गया है। इस आयताकार चौक के चारों कोनों में क्षत्रिय और गलियारे बनाए गए हैं जो पूर्णतया हिंदू राजपूत शैली पर आधारित हैं।

सारांश

इस शोध पत्र में राजस्थान में किलों का इतिहास, किलों के प्रकार, आमेर के किले की मूल स्थापत्य कला तथा राजपूत शैली का अवलोकनात्मक अध्ययन किया गया है। राजस्थान में किलों की ढांचागत संरचना में समय के साथ हुए परिवर्तनों पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा हम दूसरे प्रमुख राजपूत शासकों द्वारा निर्मित किलों जैसे मेहरानगढ़ किला, चित्तौड़गढ़ किला और जैसलमेर के किलों का भी संक्षिप्त अध्ययन किया गया है। अन्त में कहा जा सकता है कि राजस्थान के किलों की स्थापत्य कला और राजपूत शैली का अवलोकनात्मक अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि राजस्थान में किलों का इतिहास पुराना है तथा इतिहास के गलियारों के हुए परिवर्तनों की छाप राजस्थान के किलों की स्थापत्य कला पर स्पष्ट दिखाई पड़ती है। आमेर के किले के संदर्भ में में कहा जा सकता है कि किले की संरचनात्मक विन्यास पर पर राजपूत शैली के साथ मुगल स्थापत्य कला का मिश्रण दिखाई पड़ता है।

***शोधार्थी**
वनस्थली विद्यापीठ निवाई
टोंक (राज.)

संदर्भ

1. गुप्ता, टी. एन. एवं खांगारोत, आर. एस., 1999 : ''आम्बेर जयपुर : ए ड्रीम इन द डेजर्ट'', क्लासिक पब्लिशिक हाऊस, जयपुर।
2. टिलट्सन, जी.एच. आर., 1987 : ''दी राजपूत पैलेसेज'' ऑक्सफॉर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, दिल्ली।
3. संरक्षित स्मारक (जयपुर संभाग) पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर।
4. मिश्र, रतनलाल, 1991 : ''मोरच्युअरी मोन्यूमेंटस इन एनसेंट एण्ड मिडेवल इण्डिया'', बीआर. पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली।
5. सिंह, चन्द्रमणि, 2002 : प्रोटेक्टेड मोन्यूमेंटस् ऑफ राजस्थान, जे.के.के. पब्लिकेशन, सी स्कीम, जयपुर।
6. https://hi.wikipedia.org/wiki
7. https://www.tourism.rajasthan.gov.in/